भरतपुर राज्य की उत्पत्ति व उत्कर्ष और समकालीन क्षेत्रीय रियासतों के साथ संबंध (18 – 19 वीं सदी)

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

डॉक्टर ऑफ फिलॉसोफी की
उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध प्रबन्ध की रूपरेखा

शोध निर्देशक

डॉ. ललित पाण्डे

इतिहास संकाय

ज्योति विद्यापीठ विश्वविद़्यालय
जयपुर राज.

शोधकर्त्री
रिचा
JVR-1/22/10022

शोध केन्द्र

इतिहास एवं अनुसंधान विभाग संकाय

ज्योति विद्यापीठ विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	प्रस्तावना	3
2.	शोध अध्ययन की आवश्यकता	3
3.	समस्या का चयन	4
4.	प्रमुख उद्देश्य	4
5.	परिकल्पनाएँ	4
6.	शोध का प्रारूप	4
7.	शोध अध्ययन की पद्धति	4
8	आँकड़ों का संकलन	5
9	संबंधित साहित्य का अध्ययन	5
10	अध्ययन की पाठ योजना	9
11	संदर्भ ग्रंथ सूची	10

भरतपुर राज्य की उत्पत्ति व उत्कर्ष और समकालीन क्षेत्रीय रियासतों के साथ संबंध (18 – 19 वीं सदी)

प्रस्तावना –

इस शोध का विषय हैं भारत को राजस्थान राज्य के पूर्वी द्वार पर स्थित भरतपुर जिला जिसकी नीव 18वी सदी में मुगल राज्य के पतन के समय से पड़ी थी। इसमें अध्ययन किया जायेगा कि 17–18वी शताब्दी में किस प्रकार ओरंगजेब की दोषपूर्ण धार्मिक और राजनैतिक नीतियों के कारण बृज क्षेत्र ने (मथुरा व आगरा) के पास स्वतत्रंता प्रिय किसान (जाट) जाति के जमीदार गोकुल जाट के नेतृत्व में विद्रोह कि चिंगारी फूट पड़ी। इस चिंगारी की लौं से किस तरह जाट नायक चूडामन सिंह व ठाकुरबदन सिंह के और रजा सूरजमल के नेतृत्व यह लौ अठारवी सदी के हिन्दुस्तान में एक मजबूत ज्वाला बनकर भड़की। इस प्रकार इसकी उत्पत्ती और इसके प्रसार का अध्ययन करेंगे उस समय भरतपुर राज्य की सीमा आगरा , धोलपुर , अलवर , मैनपुरी , हाथरस , अलीगढ , इटावा , मेरठ , रोहतक , फरूखनगल , पलवल और गुड़ॅगाव तक फैली थी। उस समय भरतपुर राज्य के तत्कालीन क्षेत्रीय रियासत मराठा और जयपुर के साथ कैसे संबध रहे का विशलेषण करेंगे।

1.2 शोध अध्ययन की आवश्यकता :– भरतपुर एक ऐसी रियासत जिसका इतिहास महाराजा सूरजमल के नेतृत्व में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुचाँ था।

जिसका लोहागढ किला आज भी उसकी गवाही देता है। इसकी समकालीन रियासतों राज्यों मुगलो , मराठो और राजपूतों आदि के बारे में जितना लिखा गया हैं , उसकी अपेक्षाकृत भरतपुर राज्य के बारे में काफि कम लिखा गया है। इस बारे में कुवँर नटवर सिंह जी का यह कथन उचित प्रतीत होता हैं –

‘‘राजपूतों को कर्नल टॉड मिल गया , मराठो को ग्रांट डफ और सिक्खों को कनिधर्म परन्तु जाटों का कोई नामलेवा नहीं।‘‘

इस शोध में यही प्रयास किया जाएगा कि भरतपुर राज्य के इतिहास पर प्राप्त व ज्ञात तथ्यों के साथ प्रकाश डाला जाए जिससे लोग इसके स्वर्णिम इतिहास से अवगत हो सके।

1.3 समस्या का चयन :– भरतपुर राज्य की उत्पत्ति व उत्कर्ष और समकालीन क्षेत्रीय रियासतों के साथ संबंध (18 – 19 वीं सदी)

1.4 प्रमुख उद्देश्य –

1. भरतपुर राज्य का उदय किन परिश्रिथ्ततियों में हुआ इसका अध्ययन करना।
2. भरतपुर राज्य की उत्पत्ति से उत्कर्ष पर पहुँचने तक सफर इसमें महाराजा सूरजमल और अन्य योद्धाओं के योगदान को स्पष्ट करना।
3. 18वी 19 वी सदी की भरतपुर राज्य के क्षेत्रीय समकालीन रियासतों मराठा व राजपूतों के साथ संबंधों को परिभाषित करना।

1.5 परिकल्पनाएँ :– परिकल्पना अध्ययन वष्य के समबद्ध वह काल्पनिक एवं अस्थायी निष्कर्ष हैं जिसके सत्यासत्य को केवल वास्तविक तथ्य ही दर्शा सकते है। यह शोध कार्य की निम्नलिखित परिकल्पनाएँ सुनिश्चित की गई है।

1. भरतपुर जाट राज्य (17–18) सदी में उत्पत्ति किस प्रकार और किन परिस्थितियों में हुई इस पर शोध होने से भावी शोधार्थी लाभन्वित होगें।
2. भरतपुर राज्य की उत्पत्ति से उत्कर्ष में योगदान देनें वाले योद्धाओं की भूमिका स्पष्ट होगी।
3. भरतपुर राज्य के क्षेत्रिय समकालीन रियासतों के साथ कैसे राजनैतिक सबंध रहे उसका विशलेषण हो सकेगा।

1.6 शोध का प्रारूप :– प्रस्तुत अध्ययन का प्रारूप विवरणात्मक एवं निबन्धात्मक होगा। तथ्यों एवं परिकल्पनाओं के अध्ययन हेतु शोधात्मक विधि का प्रयोग किया जायेगा।

1.7 अध्ययन शोध की पद्धति :–

1. शोध विधि से तात्पर्य एक निश्चित व्यवस्था के अनुसार अध्ययन करने की प्रणाली से है।
2. इस शोध समस्या के लिए ऐतिहासिक विधि व सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा।

3. इस शोध में अध्ययन मुख्यतः विशलेषणात्मक प्रवृति का होगा।

1.8 आकँड़ो का संकलन :–

पद्धतियों एवं प्रविधियों का चुनाव हो जाने के पश्चात आकँड़ो का संकलन किया जाता हैं इस शोध के आकँडो के संकलन के दो स्त्रोत है।

1. **प्रलेखीय स्त्रोत** :– भरतपुर राज्य से संबधित सभी प्रकाशित व अप्रकाशित साहित्य , प्रतिवेदन व लेख आदि।
2. **क्षेत्रीय स्त्रोत** :– भरतपुर राज्य के इतिहास से संबधित सभी किले, महल , स्मारक व मन्दिर आदि जैसे –लोहागढ किला , दीर्घ्ज्ञ के किले , गंगा मन्दिर , जवाहर बुर्ज आदि।

1.9 संबंधित साहित्य का अध्ययन –

शोध समीक्षा से तात्पर्य हैं शोध का जो विषय हैं उससे सबंधित जितने भी ऐतिहासिक प्रमाणिक लिखित तथ्य ज्ञात है। उनका अवलोकन करना व विशलेषण करना।

1. कानूनगो , कलिका रंजन

कानूनगो कलिका रंजन :– हिस्ट्री ऑफ दी जाट्स , सूरजमल शिक्षा संस्थान , दिल्ली 1982

1. इतिहासकार कानूनगो का नाम जाटो के इतिहास के वर्णन में सर्वप्रथम आता है।
2. इन्होनें जाटों की उत्पत्ति का आरम्भिक इतिहास का वर्णन किया है।
3. इनकी पुस्तक में इस बात का वर्णन किया गया हैं किस तरह ऑंरगजेब की दोषपुर्ण नीतियों के कारण क्षेत्रिय शक्ति जैसे – जाट , मराठा आदि का उदय हुआ।
4. महाराजा सूरजमल के नेतृत्व में किस प्रकार भरतपुर एक शक्तिशाली राज्य के रूप में स्थापित हुआ उसका वर्णन हुआ।
5. इसमें समकालीन क्षेत्रीय रियासतों के साथ भरतपुर के सबंधों पर भी प्रकाश डाला गया।
6. भरतपुर राज्य के पतन की ओर जाने पर भी प्रकाश डाला गया है।

2. सिंह कुवंर नटवर

कुवंर नटवर सिंह महाराजा सूरजमल (1707–1763) संस्करण 1981

1. कुवंर नटवर सिंह ने अपनी पुस्तक की रचना महाराजा सूरजमल को केन्द्र में रखकर की थी।
2. भरतपुर राज्य के संगठन में ठाकुर बदन सिंह और महाराजा सूरजमल की भूमिका पर प्रकाश डाला गया है।
3. महाराजा सूरजमल का मुगलो, मराठो व राजपूतो के साथ संघर्ष का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया हैं।

कुवंर नटवर सिंह अपनी पुस्तक में लिखते हैं कि – "सभी प्राप्त वृतातों के अनुसार सूरजमल तब हिन्दुस्तान में सबसे धनी, बुद्धिमान राजा था। वही एक ऐसा राजा था जिसने मराठो को "चौथ और सरदेशमुखी न देते हुए भी उनसे अच्छे सम्बन्ध रखे और अब्दाली को चकमा दे दिया।

3. वर्मा रामवीर सिंह

रामवीर सिंह वर्मा : लोहागढ की यशोगाथा, प्रदीप प्रकाशन , सूरजमल नगर , भरतपुर , राजस्थान

1. रामवीर सिंह ने अपनी पुस्तक में जाट और भरतपुर राज्य को एक दूसरे का पर्याय मानते हुए अपनी पुस्तक की रचना की।
2. इन्होनें भरतपुर राज्य के उदय से लेकर वर्तमान तक की सभी महत्वपूर्ण राजनैतिक ऐतिहासिक घटनाओं पर प्रकाश डाला।
3. महाराजा सूरजमल को जाटो का प्लेटों और भारतीय संस्कृती का रक्षक क्यों कहा जाता हैं का वर्णन किया है।
4. इसमें अग्रेजों व भरतपुर राज्य के संघर्ष का भी वर्णन किया गया है।

4. **सिंह ठकुर देशराज** :–

ठाकुर देशराज सिंह – जाट इतिहास, महाराजा सूरजमल स्मारक शिक्षा संस्थान, जनकपुरी दिल्ली , द्वितीय संस्करण 1992

1. इसमे उन्होनें जाट शब्द का अर्थ , जाट जाति की उत्पत्ति उनकी शासन प्रणाली ,रहन–सहन सभी का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है।
2. इन्होनें देश के जिस–जिस कोने में जाटों का राज्य रहा हैं सभी का वर्णन किया है।
3. इनकी पुस्तक के नवम अध्याय में राजस्थान के जाट राज्यों का वर्णन किया हैं जिसके अर्न्तगत भरतपुर राज्य और राजाओं का विस्तार पूर्वक वर्णन है।

5. **अहलावत दिलीप सिंह** :–

कैप्टन दिलीप सिंह अहलावत – जाट वीरों का इतिहास ,डिघ रोहतक द्वितीय संस्करण 1992

1. इसमें जाटों के उत्पत्ति आदि काल से लेकर वर्तमान काल के बारे में जानकारी देने का प्रयास किया गया है।
2. अपनी पुस्तक के अध्याय आठ में उन्होनें भरतपुर जाट राज्य का वर्णन किया है।
3. इसमें उन्होनें उन सभी मुगल परिस्थितियों पर प्रकाश डाला जिसमें भरतपुर राज्य की स्थापना की भूमिका तैयार की।
4. इसमें राजा बदन सिंह को लेकर मान सिंह तक के काल का वर्णन किया गया है।

6. शर्मा उपेन्द्रनाथ :–

उपेन्द्रनाथ शर्मा :– जाटो का नवीन इतिहास (1–2) जयपुर

1. शर्मा जी के द्वारा लिखित दोनों संस्करण काफी तथ्य आधार प्रतीत होते है।
2. इसमें भरतपुर के संघटन , निर्माण पर काफि चर्चा हेतु।
3. इसके अलावा इतिहासकार ने मुगलो के साथ व अन्य क्षेत्रीय रियासतों के साथ हुए संघर्ष के बारे में भी काफी जानकारी उपलब्ध कराई है।

7. सिंह , डॉ. वीर/ दलोश डॉ. जीन :–

डॉ. जीन दलोश और डॉ. वीर सिंह :– हिन्दुस्तान में जाट सत्ता।

1. यह पुस्तक 18–19 वी सदी के पादरी एक. प्रकस. वैवले द्वारा फ्रेंच भाषा में लिखित वृतलेखो पर आधारित है।
2. वैवेल के वृतलेख प्राथमिक स्त्रोत होने के कारण उस समय को बड़ी मूल्यवान जानकार प्रदान करते है।

3. इसमें अठारवी सदी के उत्तरार्द्ध में पश्चिमोत्तर भारत की मुख्य रूप से मुगल और जाट शक्ति , मराठा , सिख व राजपूतों की राजनैतिक शक्ति का रूपांकंन किया है।

8. **मिड्डटन ,जॉन** :–

John Middleton World Moharchies and Dyanstics published 2015 by Roultedge

1. इस पुस्तक में इतिहासकार ने संसार की मानाको , राजतंत्र व्यवस्था के बारे में जानकारी दी गई है।
2. इसमें 11 वी सदी के तमौर वंश से लेकर महाराजा सूरजमल व ब्रिटिश साम्राज्य से भरतपुर पर शासन व्यवस्था के बारे में लिखा गया।
3. इससे भरतपुर के राजतंत्र के बारे में जानकारी मिलती है।

9. कौर मंजीत :–

मंजीत कौर :– भरतपुर के जाटो और सिक्खों का राजनैतिक संबंध

Procedings of the Indian History Cngress 16-21 , 1973-JSTOR

1. इसमें 18 वी सदी के सन्दर्भ में 1761 ई. पानीपत की तीसरी लडाई के बाद उत्तर भारत में जो राजनैतिक परिस्थितियाँ उत्पन्न हुई उसका विवरण है।
2. इसमें जाट और सिक्खों के राजनैतिक संबंधों का भी विवरण दिया गया है।

10. **पांडे राम** :–

राम पाडे – बदन सिंह और सवाई राजा जय सिंह 1722

Procedings of the Indian History Cngress Vol 30 (1968) , PP – 935-189 : JSTOR

1. इस जनरल में इतिहासकार राम पांडे ने बताया धून विजय के बाद बदन सिंह 1722 में जय सिंह के सामंत बन जाए।
2. इसमें आमेर के शासक और भरतपुर के शक्तिशाली जमीदार सबंध का विवरण दिया गया।

11. **जैन शालीन** :–

शालीन जैन :– The Rise of Jat Power in Medichel India (1665 : Indian Historical Review 34 (J) 315-320 , 2007

1. इसमें मध्यकालीन समय 1665 में किस तरह से किसानों ने मिलकर सघं बनाए और मुगलो के पतन के लाभ उठाकर भरतपुर क्षेत्र जाट शक्ति के केन्द्र के रूप में उबारा का वर्णन दिया जाता है।

12. **सिंह राज पाल** :–

राज पाल सिंह :– राइस ऑफ द जाट पावँर हरमन प्रकाशन नई दिल्ली 1988

1. इसमें 18वी सदी के राजनैतिक इतिहास का विवरण दिया गया।
2. इसमें विवरण दिया हैं कि मुगल राजनैतिक ढाँचे में क्या कमी आई जिससे इसका आरम्भ हुआ।
3. इस कमजोर लडखडाते ढाँचे पर किस तरह क्षेत्रीय शक्ति जैसे बृजक्षेत्र की जमीदार या जाट शक्ति का प्रभाव जमाना शुरू हुआ।

1.10 अध्ययन की पाठयोजना :–

1. प्रथम अध्याय – प्रस्तावना
2. द्धितीय अध्याय – भरतपुर राज्य का उदय
3. तृतीय अध्याय – महाराजा सूरजमल की भूमिका
4. चतुर्थ अध्याय – भरतपुर राज्य व मराठा
5. पंचम अध्याय – भरतपुर राज्य व राजपूत
6. षष्टम अध्याय – भरतपुर राज्य के राजवंश

1.11 संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. अहलावत दिलीप सिंह :– जाट वीरों का इतिहास ,डिघल रोहतक द्वितीय संस्करण 1992
2. आर्य निहाल सिंह :– सर्व खाप पंचायत का राष्ट्रीय पराक्रम , वंखाप पंचायत इतिहास , प्रकाशक नांगलोई 1992
3. माहेश्वरी प्रसाद :– भारतीय मध्य युग का इतिहास , इन्डियन प्रेस (पब्लिक) लिमिटेड , इलाहाबाद – 1955
4. उपाध्याय वासुदेव :– गुप्त साम्राज्य का इतिहास
5. कानूनगो कलिका रंजन :– हिस्ट्री ऑफ दी जाट्स , सूरजमल शिक्षा संस्थान , दिल्ली 1982
6. गंगा सिंह :– यदुवंश (भरतपुर का राजवंश) भरती पुस्तक मन्दिर भरतपुर 1971
7. गहलौत, सुखवीर सिंह :– राजस्थान का संक्षिप्त इतिहास
8. गुप्त परमेश्वरी लाल :– प्राचीन काल के प्रमुख अभिलेख (1–2) विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
9. चक्रवर्ती चन्द्रा :– कल्चर्ल हिस्ट्री ऑफ हिन्दूज , दीप एण्ड दीप पब्लिक राजौरी गार्डन दिल्ली 1988
10. चतुरसेन (आचार्य) भारत में इस्लाम , प्रभात प्रकाशन , दिल्ली 1971
11. जून रामस्वरूप :– दा जाट्स
12. पित्राठी रमाशंकर :– प्राचीन भरत का इतिहास , मोतिलाल बनारसी दास दिल्ली , पटना , वाराणसी , 1968
13. दहिया , बी.एस. :– जाट्य दा एन्शियट रूलर्य, स्टार्लिगं पब्लिक प्रा. लि. दिल्ली 1980
14. दुबे भागीरथ :– भारत के प्राचीन गणराज्य 1955
15. देशराज :– जाट इतिहास , महाराजा सूरजमल स्मारक शिक्षा संस्थान जनकपुरी दिल्ली , द्वितीय संस्करण 1992
16. द्विवेदी रामलखन एवं लेखराज :– मानव भूगोल की समीक्षा , किताब महल इलाहाबाद , तृतीय संस्करण 1977
17. पाणिनी :– अष्टध्यायी रामलाल कपूर पब्लि. बहालगढ़ हरियाणा 1989

18. पंतजली :– व्याकरण महाकाव्य (1–2) मोतीलाल बनारसी दास दिल्ली 1967
19. प्रधान महेशचन्द्र :– उत्तर भरत में जाटों की शासन व्यवस्था 1990 अखिल भारतवर्षीय जाट महासभा दिल्ली 1990
20. मजूमदार धीरेन्द्र :– रेसिज एण्ड कल्चर ऑफ इण्डिया , एशिया पब्लिक हाउस दिल्ली 1968
21. मजूमदार रमेशचन्द्र तथा अन्य :– हिस्ट्री एण्ड कल्चवर ऑफ इन्डियन पीपूल्स। भारतीय विद्या भवन बम्बई , द्वितीय संस्करण 1964
22. मनराल, डी.पीएस :– प्राचीन भरत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास चौंद क. दिल्ली 1981
23. मंगल देव शास्त्री :– भाषा विज्ञान , इन्डियन प्रेस प्रयाग 1956
24. मित्तल एस. के. :– भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास साहित्य–भवन, आरा , द्वितीय संस्करण 1991
25. विद्यालंकार सत्यकेतु :– प्राचीन भारत में शासन संस्था और राजनैतिक विचार सरस्वती सदन
26. विद्यालंकार सत्यकेतु :– मौर्य साम्राज्य , विचार सरस्वती सदन 1971
27. वैद्य चिन्तामणि विनायक :– हिस्ट्री ऑफ मैडविल इन्दू इन्डिया
28. शशि , श्यामसिंह :– रेमा दा जिप्सी वर्ल्ड , संदीप प्रकाशन दिल्ली 1990
29. शर्मा उपेन्द्रनाथ **:–** जाटो का नवीन इतिहास (1–2) जयपुर
30. शर्मा परवेश तथा राजपाल :– क्षत्रियों का इतिहास , मधुर प्रकाशन , बाजार सीताराम दिल्ली 1978
31. शर्मा राम विकास :– मानव सभ्यता का विकास , वाणी प्रकाशन , दिल्ली तृतीय 1991
32. श्री वास्तव, आर्शीवादी लाल :– भरत का इतिहास (1000–1707) शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी आगरा , द्वितीय संस्करण 1969
33. शुक्ल चिंतामणी :– मथुरा जनपद का राजनैतिक इतिहास , द्वितीय संस्करण
34. साकृत्यायन, राहुल :– बौद्ध दर्शन, किताब महल इलाहबाद संस्करण 1980

35. कनिंघम , एलेक्जेन्डर :– प्राचीन भारत का इतिहासिक भूगोल आदर्श हिन्दी पुस्तकालय इलाहबाद 1971
36. कनिघंम जे.डी. :– हिस्ट्री ऑफ दा सिक्खम
37. हावेल , ई.बी. :– दा हिस्ट्री ऑु आर्यन्स रूल इन इण्डिया , के एम.एम पब्लिक जोर बाग , दिल्ली 1972
38. रिजले हर्बट :– भारत की जनगणना रिपोर्ट 1901
39. ट्रम्प एण्ड वीम :– दा थ्योरी ऑफ आर्यन ओरिजन ऑफ दा जाट्स
40. फौजदार राजेन्द्र :– जाट समाज पत्रिका , सी – 20 न्यू आगरा
41. चोंबे , राधारमण :– भरतपुर राज्य का संक्षिप्त इतिहास
42. टॉड कर्नल जेम्स :– टॉड कृत राजस्थान भाग– 1 खण्ड 1 (राजपूत कुलो का इतिहास) मंगल प्रकाशन , जयपुर
43. दीक्षित :– बृजेन्द्र वंश भास्कर , ले.पं. गोकुल चन्द दीक्षित
44. भार्गव :– राजस्थान का मध्यकालीन अतहास, ले. डॉ विश्वेश्वर स्वरूप भार्गव , 1966
45. मीतल :– ब्रज का सांस्कृतिक इतिहास , लेखक–प्रभूदयाल मीतल 1966
46. सूदन :– ऐति. काव्य सुजान चरित , प्रका. ना प्र.स. वाराणसी
47. ठर्विन :– मुगल , लेटर मुगल्स, खण्ड 1 व 2 ले सर विलियम इर्विन संस्करण 1922
48. कुन्ज बिहारी :– दा इबोल्यूशन ऑफ एडमिन्स्ट्रेशन ऑफ दा फार्मर
49. ग्राउत :– मथुरा : ए डिस्ट्रिक्ट मेमॉयर , ले.एफ. एम. ग्राउज संस्करण 1880 ई.
50. गोरीशंकर :– (टंकण) रिलेसंस बिटविन दॉ ईस्ट इन्डिया कम्पनी एण्ड भरतपुर 1761–1825 ई.ले. डॉ गौरीशंकर वशिष्ठ आ. वि.वि. आगरा
51. ज्वाला सहाय :– हिस्ट्री ऑफ भरतपुर 1912 ई.
52. कु. नटवरसिंह '– महाराजा सूरजमल (1707–1763) संस्करण 1981
53. डॉ. मथुरा लाल :– हिस्ट्री ऑफ दा जयपुर स्टेट , 1969 ई.
54. डॉ. राम पाण्डे :– भरतपुर अप टू 1826
55. सरस्वती महर्षी दयानन्द :– सत्यार्थ प्रकाश , आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट 455 ख्च्याारो बाबली दिल्ली – 6 , 1988

56. वर्मा, रामवीर सिंह :– जाटों का गौरवशाली इतिहास , मनु प्रकाशन मौ. गोपालगढ, भरतपुर 1991
57. ए गजेटियर ऑफ भरतपुर स्टेट :– ले.सी.के.एम. बाल्टर, आगरा 1868
58. गजेटियर ऑफ राजपूताना :– खण्ड प्रथम1879 ई० खण्ड – 3 , 1880
59. विद्यालंकार , डॉ० धर्मूचन्द :– जाटों का पंचायती–शासन, वीर साहित्य प्रकाशन शोरा कोठी , रेल्वे रोड , पलवल (हरि) 1990
60. कानूनगो कलिका रंजन :– हिस्ट्री ऑफ दी जाट्स , सूरजमल शिक्षा संस्थान , दिल्ली 1982
61. सिंह कुवंर नटवर :– महाराजा सूरजमल (1707–1763) संस्करण 1981
62. वर्मा रामवीर सिंह :– लोहागढ की यशोगाथा, प्रदीप प्रकाशन , सूरजमल नगर , भरतपुर , राजस्थान संस्करण 2013
63. सिंह ठकुर देशराज :– जाट इतिहास, महाराजा सूरजमल स्मारक शिक्षा संस्थान, जनकपुरी दिल्ली , द्वितीय संस्करण 1992
64. अहलावत दिलीप सिंह :– जाट वीरों का इतिहास ,डिघल रोहतक द्वितीय संस्करण 1992
65. शर्मा उपेन्द्रनाथ :– जाटो का नवीन इतिहास (1–2) जयपुर
66. सिंह , डॉ. वीर / दलोश डॉ. जीन :–हिन्दुस्तान में जाट सत्ता। (वैदेल के वृतलेख)
67. मिड्डटन ,जॉन :– विश्व राजतंत्र और राजवंश प्रकाश राहालटेज 2015
68. कौर मंजीत :– भरतपुर के जाटो और सिक्खों का राजनैतिक संबंध , इडियन हिस्ट्री आयोग।